कक्षा – दस

विषय -हिंदी

# क्षितिज भाग-2
# पाठ-5
# कविता - अट नहीं रही है
## कवि - श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

मोड्यूल-१/१ (हैण्ड-आउट)

प्रस्तुतकर्ता:-
**शिवदत्त शर्मा**
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय , नरौरा

## सारांश

कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने फाल्गुन की आभा का मानवीकरण किया है। फाल्गुन की शोभा इतनी अधिक है कि वह प्रकृति व तन-मन में समा नहीं पा रही है ।वातावरण में सर्वत्र प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम छटा देखते ही बनती है । संपूर्ण वातावरण पुष्पित और सुगंधित हो गया है। फाल्गुन की मनमोहक प्रकृति एवं मादकता व्यक्ति को कल्पना के पंख लगा कर अनंत आकाश में उड़ने के लिए उत्साहित करती है। फागुन की सुंदरता की व्यापकता के दर्शन पेड़ ,पत्ते, फूल आदि में हो रहे हैं।